श्री ब्रह्म दत्त : सभापति जी, मैं छिपा बिलकुल नहीं रहा हूं । इसके कम्पोनेंट्स जो हैं उनमें पहला आइटम है कूड आयल की कास्ट और दूसरा आइटम है रिफाइनिंग की कास्ट । कूड आयल की कास्ट फिक्सड तो है नहीं । जो कूड आयल है उसकी कास्ट तो हर दिन हर हफ्ते बदलती है । (व्यवधान) आप कहें तो मैं यह पूरी सूचना प्रतिशत में कितना है सदन को उपलब्ध करा दूंगा । मुझे इसमें कोई एतराज नही है ।

MR. CHAIRMAN: Very good.

SHRI KAPIL VERMA: Mr. Chairman, Sir, the Minister has said just now about the items being subsidised for the poor people. May I know from the Minister what is the saving in expenditure on subsidy because of the fall in prices?

Secondly, may I also know from the Minister whether the Government is going to reduce the price of kerosene which is mostly used by the poor people?

SHRI BRAHM DUTT: Sir, actually savings depened on the prices prevailing at a particular time. In the current year we propose to save about $ 335 million. As regards reducing the kerosene price, I cannot make a promise. We don't have any proposal to increase the prices of petroleum products.

SHRI KAPIL VERMA: Will you consider reducing the price of kerosene?

SHRI BRAHM DUTT: When the time comes.

Specially designed generators for rural areas

*143. DR. RATNAKAR PANDEY:†
SHRI SURENDRA SINGH THAKUR:

Will the Minister of ENERGY be pleased to state:

(a) whether his Ministry is considering any proposal to couple specially designed generators to wheels in rural areas in the country to generate enough power for small and limited purposes; and

(b) if so, what are the details thereof?

THE MINISTER OF ENERGY (SHRI VASANT SATHE): (a) and (b) A statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) and (b) Yes, Sir. The Department of Non-Conventional Energy Sources has sponsored projects on harnessing animal and human power for generation of small quantities of electricity for use in rural areas. A bullock driven prototype has already been developed and is being tested. This charges standard 12 V battery in about 3 hours, using two bullocks. Further studies are being undertaken to improve its efficiency and make it more compact.

In addition, prototypes using cycle wheels to generate electricity power have been developed. Proposals for coupling potters' wheels and other systems to small generating units are also being worked upon.

डा० रत्नाकर पांडेय : माननीय सभापति जी, पहियों के साथ विशेष डिजाइन वाले जेनरेटरों को जोड़ देने से बिजली का उत्पादन बढ़ाने की योजना अपारंपरिक ऊर्जा स्रोत विभाग ने ग्रामीण क्षेत्रों के लिए मानव तथा पशु शक्ति से थोड़ी मात्रा में विद्युत प्राप्त करने के लिए बनाई है और यह ऊर्जा मंत्रालय का एक अच्छा प्रयोग है जनता की बिजली की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए । इसके लिए "मिनी जेनरेटर्ज प्लान फार विलेजेस" शीर्षक से एक

†The question was actually asked on the floor of the House by Dr. Ratnakar Pandey.

समाचार 2 अक्तूबर के हिन्दुस्तान टाइम्स में आया था जिसमें किसी सुयोग्य इंजीनियर श्री अशोक राय ने अपनी योजना सरकार के पास भेजी है। इसके अतिरिक्त सरकार नेशनल इंस्टीट्यूट इन इंडस्ट्रीयल इंजीनियरिंग, बम्बई, आई०आई०टी० और रूरल डवलपमेंट विभाग ने इस संबंध में जांच पड़ताल करा रही है। मैं यह कहना चाहता हूं कि आज किसान को बिजली की बहुत अधिक आवश्यकता है उत्पादन के लिए और जीवन की अन्य आवश्यकताओं के लिए। दिन भर परिश्रम करने के बाद जब किसान घर आता है तो उसे इस बात की जरूरत पड़ती है कि थोड़ा उसका मनोरंजन हो और मनोरंजन का साधन बिजली के माध्यम से दूरदर्शन और रेडियो रह गए है। मैं यह जानना चाहता हूं कि जो पहियों से जेनरेटर लगाकर किसानों के लिए बिजली उपलब्ध कराई जाएगी वह क्या किसान को रियायती दर पर दी जाएगी और जेनरेटरों का जो खर्च होगा वह सरकार उठाने को तैयार है और क्या एक परिवार को इस योजना के माध्यम से चार पांच घंटे आवश्यक बिजली मिलेगी ? यह मैं जानना चाहता हूं।

श्री वसंत साठे : सभापति जी, यह अशोक राय जी और दूसरे व्यक्तियों ने हा योजना नहीं दी है इसके पहले भी यह प्रयास किया जा रहा है कि गांवों में जहां कहीं भी मानव शक्ति का या हमारे बैलों की शक्ति का या किसी भी शक्ति का प्रयोग जेनरेटर लगा कर यहां तक कि जो हम घड़े बनाते हैं उसमें जो चक्का घुमाते हैं। किसी भी ऐसी शक्ति में अब यह संभव है कि यदि उसमें जनरेटर लगा दिया जाये तो उस काल में जब तक वह घूमती है तो बैटरी चार्ज हो जायेगी और बैटरी चार्ज हो जाये तो फिर शाम को या जब कभी आपको जरूरत है घर में टेलीविजन, रेडियो या स्टीरियो आदि के लिए तो उस बिजली का उपयोग किया जा सकता है। अब यह संभव हो रहा है और बड़ी खुशी की बात है अगर ये जनरेटर्स जिसे कार्मशियल बेसिस कहते हैं उस बेसिस पर बनने लग जाए। दूसरा हर चीज गवर्नमेंट मुफ्त दे यह जो बहुत बार सुझाव आते हैं तो इससे योजनाएं फेल होती है। मैं यह सोचता हूं कि ये जनरेटर्स बड़े काम के होंगे और जब ज्यादा तादाद में पैदा होंगे तो गांव-गांव में लोग इसे खुद खरीदें। इसमें दोनों तरफ से बचत होगी और घर में ही लोग बुलक पावर, व्हील पावर, तेलघनी चलती है उसकी पावर, या ईवन कोई बच्चा घर में साइकिल भी गोल घुमाता है या हमारी पहाड़ी गांवों में जो वह सब चलता है रहट आदि पानी खींचने के लिए या पवन चक्र ये जितने भी माध्यम है इनसे बिजली पैदा कर सकते हैं और घरेलू काम में उपयोग ला सकते हैं। हम इस योजना को प्रोत्साहित करना चाहते हैं और बड़े गौर से इसके ऊपर हम अध्ययन कर रहे हैं।

डा० रत्नाकर पांडेय : माननीय सभापति जी, क्या सरकार ने ऐसे ग्रामीण क्षेत्रों का आइडेंटीफिकेशन कर लिया है जहां यह स्कीम चालू की जायेगी और स्टेट गवर्नमेंटस से क्या इस संबंध में कोई पूछताछ की गयी है या उनसे कोई रिपोर्ट मांगी गयी है। हमारे मंत्री जो बड़ी व्यवहारिक योजनाओं पर विचार करने वाले है।

श्री सभापति : आप प्रश्न पर आइये।

डा० रत्नाकर पांडेय : और उसमें मैं जानना चाहता हूं कि टाइम बाउंड ढंग से ये योजना कब शुरू करने का सरकार का प्रस्ताव है, कब यह लागू हो जायेगी ?

श्री वसंत साठे : आपको शायद मालूम होगा कि इसके पहले भी मैंने सदन में कहा है कि समन्वित ऊर्जा की एक हमारी योजना है जिसे हम ऊर्जा ग्राम के रूप में चालू करना चाहते हैं। जो जो माध्यम हों ऊर्जा के जैसे सोर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायो मास से ऊर्जा, अब इस चक्र से जो गति मिले वह ऊर्जा इसको चक्र ऊर्जा कहिए (व्यवधान) अब जो कोई भी नाम दें मुझे मंजूर है (व्यवधान) चक्रम नहीं होनी चाहिए।

श्री सभापति : चक्रम योजना कर दीजिए।

श्री वसंत साठे : चक्रम ऊर्जा केवल नहीं होनी चाहिए। कल्पना यह है कि कि इन सारे माध्यमों का प्रयोग करके

गांवों को ऊर्जा के मामले में हमें स्वयंपूर्ण बनाना है और यही उद्देश्य हैं इसी उद्देश्य से हम इस योजना को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

श्री सुरेन्द्र सिंह ठाकुर : माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय मंत्री महोदय के इस वक्तव्य का स्वागत करता हू कि इन ग्रामीण अंचलों को ऊर्जा के संदर्भ में स्वावलम्बी बनाना चाह रहे हैं और इसके लिए श्री अशोक राय द्वारा खोजे गये मिनी जनरेटर का भी मैं हृदय से स्वागत करता हूं। माननीय मंत्री जी का ख्याल है कि इन बातों को प्रोत्साहित किया जाये लेकिन मेरा साथ में निवेदन है कि आप जिन लोगों के लिए इसको प्रोत्साहित करने जा रहे हैं चाहे कुम्हार के चक्के पर इसको चलायें या किसी कृषक की बैलगाड़ी पर जनरेटर को लगायें, चूंकि गवर्नमेंट के एक कार्यक्रम के रूप में इसे स्वीकार करने जा रहे हैं तो जरूरी होगा कि इसके स्वीकार करने के पहले--हालांकि आपने उत्तर में कहा है कि आपने स्वीकार कर लिया है--आप यह जान लें कि इससे कितनी ऊर्जा पैदा होगी, इसका उपयोग किस प्रकार से होगा और जिन लोगों के उपयोग के लिए यह ऊर्जा आयेगी क्या उनको यह इक्नामिकल रहेगी, क्या इस ऊर्जा का उपयोग वाकई में वे कर पायेंगे, यह मैं जानना चाहूंगा।

श्री वसंत साठे : मान्यवर, जैसा मैंने जवाब में कहा है कि यदि एक बैलगाड़ी तीन घंटे चले, तो बारह वोल्ट की बैटरी चार्ज हो जाती है जो आपको तीन घंटे काम देगी। तो इसलिए यह अध्ययन चल रहे हैं।

श्री सभापति : आप अभी अध्ययन कर रहे हैं।

श्री वसंत साठे : इसका अध्ययन कर रहे हैं। हरेक चीज का अलग-अलग उपयोग होगा और अलग-अलग गति से वह हमको मिलेगी, लेकिन इस सारे अध्ययन से एक बात स्पष्ट है और वह यह कि इन सारी गतियों का उपयोग जेनरेटर के द्वारा बैटरी चार्ज करके बिजली मिलाने में होता है और जो काफी इक्नामिकल साबित होगा। ... (व्यवधान)

श्री सुरेन्द्र सिंह ठाकुर : मान्यवर, आपने श्रीमती रेणुका चौधरी को पांच-पांच सवाल पूछने दिये, मुझे दो तो दीजिए।

श्री सभापति : नहीं, कानून एक का है।

श्री सुरेन्द्र सिंह ठाकुर : उनको पांच पूछने दिये गये थे।

श्री सभापति : नहीं, नहीं किसी को पांच नहीं पूछने दिये गये हैं।

श्री राम अवधेश सिंह : माननीय मंत्री जी ने अभी कहा कि संतुलित ऊर्जा के विकास के बारे में सरकार सचेष्ट है, लेकिन मैं एक बात पूछना चाहता हूं और यह बात टैक्नीकली साबित की जा चुकी है कि थर्मल ऊर्जा और पन-बिजली की ऊर्जा में 40 और 60 का रेशो रहेगा, तभी उस इलाके में बिजली संतुलित रह सकती है। तो मैं यह पूछना चाहता हूं, मान्यवर, कि बिहार में दस हाईडल और 90 प्रतिशत थर्मल पावर है और इसी कमी को पूरा करने के लिए कोयलकारो प्रोजेक्ट की स्थापना की गई है।

श्री सभापति : यह सवाल उस पर नहीं है। This question does not arise out that. Please sit down. Now Mr. Vishwa Bandhu Gupta.

श्री राम अवधेश सिंह : हमारे यहां असंतुलन है ... (व्यवधान)

श्री सभापति : वह सब को मालूम है।

श्री राम अवधेश सिंह : यह सवाल दूसरा है, ऊर्जा से संबंधित है ।

श्री सभापति : यह दूसरा ही सवाल है । जनाब आप बैठ जाइये।

SHRI VISHWA BANDHU GUPTA: I think the honourable Minister is aware that ultimately all energy on this planet is coming from the sun. The sun is the basic energy that we have and the only problem with this energy is that it cannot be stored. I wish more research could be done on storage of energy. I know your department is doing good work in this direction. But I think intensive work needs to be done so that it will solve our problem and change the face of our country in the rural areas. It can only be done by storage of energy, by finding **new methods of storage.** The other problems have already been solved. You take energy from solar cells or from wind...

MR. CHAIRMAN: Mr. Minister, he is inquiring about storage.

SHRI VISHWA BANDHU GUPTA: I would like to know whether intensive work is being done for storage of wind energy, electric energy produced by wind and energy produced in other ways. Is the Govenment doing anything about storage?

SHRI VASANT SATHE: Yes. We are very keen and conscious that this problem of storage should be solved. I believe that solar energy is the only energy, is the real solution, to the energy problem of this country and we are depending on the sun.

*144. [*The questioner (Shri Basudeb Mohapatra was absent. For answer* vide cols. infra.]

*145 [*The questioner (Shri Kailash Pati Mishra and Shri Ashwani Kumar) were absent. For answer vide cols.* infra.]

Reconstitution of Coir Board

*146. SHRI N. E. BALARAM:†
SHRI E. BALANANDAN:

Will the Minister of INDUSTRY be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the Coir Board has been reconstituted recently;

(b) if so the names of the new Board Members and the nature of interests they represent;

(c) whether it is a fact that the Kerala State where maximum coir and coir products are produced has not been given proper representation in the Board; and

(d) if so, what are the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT IN THE MINISTRY OF INDUSTRY (SHRI M. ARUNACHALAM): A statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) to (d) The Coir Board was reconstituted with effect from 16th September 1988 for a term of 3 years. The names of members of the reconstituted Coir Board are as under:—

(a) Growers of coconuts and producers of husks and coir yarn.

1. Shri V. R. Prasad.

2. Shri Kumud Bhattacharjee—Has since resigned.

3. Shri V. K. Laxmanan.

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri N. E. Balaram.